



"पूज्य नहीं है", क्योंकि किसी व्यक्ति को ऐसा कथन कहने के लिए उसके पास शुरू से लेकर अंत तक पूरे ब्रह्मांड का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इसलिए यह मुश्किल है। अपने सीमित ज्ञान की बुनियाद पर तार्किक रूप से इंसान अधिक से अधिक यही कह सकता है कि मैं अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान नहीं रखता हूँ।

अनुकूलता : परम (अनियत) सत्य का इनकार हमें ले जाता है :

विरोधाभास की ओर, हमारे दिल के सही यकीन के साथ तथा जीवन के अनुभवों और वास्तविकता के साथ।

अस्तित्व में किसी भी चीज़ के सही या ग़लत न होने की ओर। उदाहरण के तौर पर अगर मेरे लिए सही बात सड़क के नियमों की अनदेखी करना है, तो मैं अपने आसपास के लोगों के जीवन को खतरे में डालूंगा। इस प्रकार, मनुष्यों के बीच सही और ग़लत के मानकों में टकराव होगा और इस तरह किसी भी चीज़ के बारे में निश्चित होना असंभव हो जाएगा।

एक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार अपराध करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त हो जाएगी

और क़ानून बनाना या न्याय स्थापित करना मुश्किल हो जाएगा।

पूर्ण स्वतंत्रता वाला व्यक्ति एक बदसूरत प्राणी बन जाता है और जैसा कि यह सिद्ध हो चुका है और इसमें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं है कि इंसान इस स्वतंत्रता को सहन करने में असमर्थ है। ग़लत व्यवहार ग़लत है, भले ही दुनिया उसके सही होने पर एकमत हो जाए। यह एकमात्र सत्य और वास्तविकता है कि नैतिकता सापेक्ष नहीं है और समय या स्थान के साथ बदलती नहीं है।

व्यवस्था : एक व्यापक (अनियत) सत्य की अनुपस्थिति अराजकता की ओर ले जाती है।

उदाहरण स्वरूप, यदि गुरुत्वाकर्षण का नियम एक वैज्ञानिक सत्य नहीं होता, तो हम एक ही स्थान पर खड़े होने या बैठने पर तब तक निश्चित नहीं होते, जब तक कि हम फिर से हिल नहीं जाते और हम इस बात पर निश्चित नहीं होते कि हर बार एक और एक का योग दो होता है। सभ्यता पर इसका प्रभाव गंभीर होता, विज्ञान और भौतिकी के नियम महत्वहीन हो जाते और लोगों के लिए खरीद-बिक्री का काम करना असंभव हो जाता।

ଓଡ଼ିଆ ଚିତ୍ରଣା ଶିକ୍ଷା କା ପିଠିଠା

୧୧୧୧୧୧: ୧୧୧୧୧://୧୧୧.୧୧୧୧୧.୧୧୧/୧୧-୧୧୧୧୧/୧୧/44/

୧୧୧୧୧୧ ୧୧୧୧୧୧: ୧୧୧୧୧://୧୧୧.୧୧୧୧୧.୧୧୧/୧୧-୧୧୧୧୧/୧୧/44/

୧୧୧୧୧୧ 3୧୧ ୧୧ ୧୧୧ 2026 11:14:08 ୧୧